भीतर जाकर लेट गया, जबकि अभी फेरे होने बचे थे। पीछे-पीछे लड़की का बाप भी चला आया। उसने लाचारी से पूछा,

पंडित जी क्या हुआ?

तो जवाब मिला - कुछ नहीं यजमान ! मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मैं अब कुछ नहीं कर सकता, तुमने मंडप को गू कर दिया है। मैं तो देवता का आदमी ठैरा तुम जानते ही हो।

पंडित जी की यह बात सुनकर दुल्हन का बाप भी सकपका गया। पंडित ने फिर कहा, सब कुछ जानते, सुनते हुए भी कुजर्त करना तो गलत ही हुआ ना! इस कलुवे फोटुक वाले को किसने बुलाया है?

दुल्हन के बाप ने कहा- पंडित जी, नरी ने। तभी जो कहूँ कि बात क्या है। पागल हो गया है क्या तुम्हारा लड़का यजमान! चार पैसे फौज से कमा लिए तो पितरों का पुण्य मिट्टी कर देगा वह!

इस बात पर दुल्हन के बाप ने भी पंडित के हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा,

कहा था पंडित जी, पर लड़का माना ही नहीं ! अब आप ही बतायें आगे क्या होगा?

यह सवाल दुल्हन के पिता ने लाचार होते हुए पूछा था। कन्यादान में दी हुई आधे तोले की अंगूठी को अंगुली पर ही घुमाते हुए अंबादत्त ने कहा,

अभी के अभी उसे यहाँ से रफ्ता करो, नहीं तो अनिष्ट हो जाएगा यजमान !

हारे मन से दुल्हन का पिता बाहर आया और फोटुक भिन्ज्यू को गोठ में ले जाकर विनम्र होकर समझाया,

बुरा मत मानना तुम ! तुम्हारा ससुर मेरा अच्छा दोस्त था। दुनियादारी में भले ही उसकी और मेरी जात अलग-अलग थी पर जब भी अकेले में साथ रहे हमने कभी एक- दूसरे को जात-पात में नहीं देखा। आज कन्यादान है, नरी से पहले ही कह दिया था मैंने कि फोटुक से क्या करना पर माना नहीं। अब बहुत फोटो खींच ली आपने, मैं चाहता था कि और भी खींचो पर अंबादत्त रिसा रहा है, कह रहा है तबियत खराब हो गयी है सब अपवित्र हो गया है।

इस बात पर फोटुक भिन्ज्यू कुछ नहीं बोले। उसकी समझ में आ गया था कि बात आखिर क्या है। फोटुक भिन्ज्यू बाहर आये तब तक फेरों के लिये दुल्हन तैयार होकर आ गयी थी। दूल्हा पार्टी भी खाना खा कर आ गयी। अब शुरू होने थे फेरे। तभी नरी ने फोटुक भिन्ज्यू को पकड़ लिया,

अरे! कहाँ हो आप रम पी लो एक पैग ।

फोटुक भिन्ज्यू ने कहा,

नहीं यार नरी ! कैमरे में गड़बड़ी हो गयी है अब फोटुक नहीं खींच पायेगा यह। अब मैं जाता हूँ, फिर तुम्हारी छुट्टी से पहले फोटुक देनी भी पड़ेगी ना। सफाई को दे देता हूँ। यह कहते हुए फोटुक भिन्ज्यू चले गये। तभी फिर से आँगन में उतर आया अंबादत्त और फिर से पाठ हुए। इस बार कैमरे की झिझक नहीं थी सो दुल्हन जोर-जोर से रोई क्योंकि अब फोटुक भिन्ज्यू जा चुके थे... तो अंबादत्त के समझ ना आने वाले मन्त्र भी महत्वपूर्ण हो गये थे...जबकि फोटुक भिन्ज्यू के दिल में यह बुरी 'फाम' कैमरे की 'खिच्याक..!' वाली आवाज के साथ आजीवन टसकती रही। ■

## लघुकथा

# भूकम्प

पवित्रा नदी के किनारे एक घनी आबादी वाला शहर बसा था। शहर के मुहल्लों में पांच-पांच फीट की गलियों में बनी सात-सात मंजिली इमारतों में कई धर्मों के लोग निवास करते थे। लेकिन ऊँची इमारतों में रहने भर से इंसान के विचार भी ऊँचे नहीं हो जाते। धार्मिक कट्टरता और श्रेष्ठता की वजह से वे आपस में झगड़ते रहते और जब-तब दंगा भड़क उठता। उनके बीच नफरत का ये आलम था कि वे एक दूसरे की पूजा स्थलों में प्रवेश करना तो दूर, झाँकना भी पाप समझते थे। उन पूजा स्थलों में विराजमान प्रभुओं को एक दूसरे की प्रार्थनाओं से भले कोई शिकायत न हो, पर उनके भक्तों को जबर्दस्त ऐतराज होता था। वक्त यों ही गुजर रहा था। एक दिन अचानक आठ रिक्टर स्केल की तीव्रता वाला भूकम्प उस महादेश खंड को हिला गया। लोग अपनी जान बचाने के लिए चीखते-पुकारते खुले स्थान की तलाश में इधर-उधर पागलों की तरह दौड़े लेकिन खुली जगह रहे तब न? ले-देकर पूजा स्थलों में ही कुछ जगह बची थी। मरता क्या न करता, जिसे जिसमें मौका मिला शरण ली और अपने-अपने ईश्वर से सलामती की दुआ मांगी। दहशत के बीच जैसे-तैसे रात गुजरी। सैकड़ों लोग अपने ही जमींदोज हुए आशियाने में दफन हो गये। प्रकृति का कहर बिना किसी भेद-भाव के सब पर बरपा। पूजा स्थलों को भी कुछ नुकसान पहुँचा। सुबह शरण लिये लोग बिना किसी बैर-भाव के उन क्षतिग्रस्त पूजास्थलों की मरम्मती में लगे थे। उस भूकम्प के बाद शहर में न तो कभी दंगे-फसाद हुए और न उन धार्मिक स्थलों से उठने वाली प्रार्थनाओं से किसी को कोई एतराज हुआ।

**अशोक कुमार प्रजापति**
**'पारिजात भवन'**
**1112/बी-6, मौर्य विहार ;कुम्हरार, पोस्ट-बहादुरपुर हाउसिंग कॉलोनी,पटना-8ै26,**
**मो. 9771425157**